

# आकलन, सीखना और पाठ्यक्रम की सीढ़ी

रजनी दिव्य कुमार



**मैं**ने अपने बेटे नील को मॉन्टेसरी से कक्षा एक के बीच एक साल तक घर में पढ़ाया। कई सारे कारणों की वजह से हमें यह करना पड़ा था; नील की एलर्जियाँ, स्कूली शिक्षा का उसका कड़वा अनुभव और हम पास में कोई अच्छा स्कूल भी नहीं तलाश पाए। इसके अलावा 10 साल तक एक वैकल्पिक स्कूल में शिक्षक रहने के बाद मैंने सोचा क्यों न अपने बच्चे को घर पर शिक्षा देकर देखा जाए।

नील को घर पर शिक्षा देना स्कूल की कक्षा में पढ़ाने से बहुत ज्यादा अलग साबित हुआ।

स्कूल में, मेरे लिए आदेश होता था कि मुझे एक निश्चित भाग, जो स्वीकृत पाठ्यचर्या होती थी, पूरा करना था। मेरा काम था पाठ्यक्रम की सीढ़ी (अवधारणात्मक ज्ञान, कौशलों, दुनिया की पड़ताल करने आदि) पर बच्चों को एक-एक सीढ़ी चढ़ाते हुए ऊपर जाने में मदद करना। मुझे यह सुनिश्चित करना था कि उनका सीखना सक्रिय रूप से हो और कि हम जो भी कर रहे थे उसका बच्चे के समग्र कल्याण में योगदान हो। मैंने अवलोकन, बातचीत, लेखन कार्य और परीक्षण का इस्तेमाल यह देखने के लिए किया कि प्रत्येक बच्चा उस सीढ़ी पर कहाँ था। बच्चों के सीखने में भेद थे, पर कुल मिलाकर हम अपनी निगाहें पाठ्यक्रम की सीढ़ी पर रखे रहे।

नील के साथ, मुझे मुख्यतः इस बात की चिन्ता थी कि वह सक्रिय रूप से सीख रहा था कि नहीं। मुझे इस बात की ज्यादा चिन्ता नहीं थी कि वह सारी दिशाओं में बराबर सीख रहा या नहीं। सीखने की मजबूती तो उसको ऐसे अनुभव देकर भी हासिल की जा सकती थी जो उसकी पहलों और उत्साह पर आधारित हों। मेरी सहज समझ यह थी कि किसी विषयवस्तु को सीखने के क्रम में आने वाली अनियमितता और असमानता पर

अगर जरूरत हो तो बाद में ध्यान दिया जा सकता है। जिस एक चीज को दिमाग से निकाल देना बहुत कठिन प्रतीत होता है वह है अपने बारे में यह धारणा कि मैं इस चीज में “बुरा” हूँ, अर्थात् जो निराशा और “फँसे होने” का भाव बच्चे अपने बारे में किसी विषय या अध्ययन-क्षेत्र विशेष को लेकर विकसित कर लेते हैं।

## घर पर सीखना

तो मेरा तरीका मुख्यतः था यह देखना था कि उसकी दिलचस्पी किसमें थी। ऐसी चीजें थीं जिन्हें करना उसे साफ तौर पर पसन्द था। वह जानवरों की किताबों को बहुत ध्यान से पढ़ता था, जिससे उसके मन में इस तरह के सवाल पैदा होते थे कि किस तरह जानवर एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। उसे एक किताब मिल गई जिसमें प्रत्येक पशु समूह का, हर समूह के जानवरों की ढेर सारी तस्वीरों के साथ वर्णन किया गया था। वह चाहता था कि मैं उसे समझाऊँ कि किस तरह प्रत्येक समूह दूसरे से अलग था। इससे दो दिशाएँ खुलीं। एक जीवन के उद्भव की तरफ, जो पृथ्वी के उद्भव, टेक्टोनिक प्लेटों के खिसकने, ज्वालामुखियों और डायनासोरों जितने पीछे तक पहुँच गई। मुझे लगा कि उसे यह पढ़ने में बहुत मजा आएगा कि जानवरों ने किस तरह विभिन्न परिवेशों के अनुरूप खुद को ढाला। मैंने यूट्यूब पर डेविड एटेनबॉरो की “द लिविंग प्लैनेट” ढूँढकर उसे दिखाई। वह उससे चिपक ही गया। इसी दौरान उसके पिता सप्ताहान्तों पर उसे पक्षियों को दिखाने ले जाते थे। कभी-कभी मैं पढ़ना-पढ़ाना शुरू कर देती थी, सवाल पूछती थी और उसे संख्या के खेल सिखाती थी। इनमें से कुछ में उसका चित्त बहुत लगता था, खासतौर पर तब जब हम बड़ी संख्याओं की गिनती करने की कोशिश करते थे, पहले दसियों तक, फिर सैकड़ों में और फिर

हजारों में। शब्द बनाने में कोई बहुत मजा नहीं आया। हम खरीदारी और खाना बनाने, वृद्धि के चार्टों, दवाई की खुराकों, कार की दूरियों और गतियों के सन्दर्भ में कुछ गणित की बातें सीख लिया करते थे।

उसने उस पूरे साल में बमुश्किल कुछ लिखा। स्कूल में उसका लिखने का बहुत बुरा अनुभव रहा था। हालाँकि वह एक उत्साही और वाचाल विद्यार्थी है, लेकिन लिखने के लिए जरूरी प्रेरक पेशी का नियंत्रण (मोटर कन्ट्रोल) ठीक ढंग से विकसित नहीं हुआ था। उसके शिक्षकों ने जोर दिया था कि वह लिखे और हमने घर पर उसे इसके लिए बहुत मनाया था। पीछे मुड़कर देखने पर समझ में आता है कि यह एक गलती थी। वह लिखना सीखने के लिए तैयार ही नहीं था, अगर दूसरे ढंग से कहूँ तो यह उसके समीपस्थ विकास की पहुँच में नहीं था। उसने बहुत सारा समय ऐसी चीज करने में लगाया जो उसके लिए बहुत मुश्किल थी, बजाय ऐसी चीज करने में जिसे करके वह खुद को समर्थ और ऊर्जा से भरा हुआ पाता।

पर उस साल उसने बहुत पढ़ा। वह बड़े बच्चों के लिए बनी किताबों को पढ़ रहा था। ऐसा इसलिए भी था क्योंकि उसके पास बहुत सारा अव्यवस्थित समय था, किताबें उपलब्ध होती थीं और उसके आस-पड़ोस के मित्र अनुपलब्ध होते थे क्योंकि वे स्कूल में होते थे।

यदि आकलन का मतलब यह पता लगाने की कोशिश है कि पाठ्यचर्या की पूर्व-निर्धारित मात्रा की तुलना में आपका बच्चा कहाँ है, तो मैंने अपने बेटे का आकलन नहीं किया। असेसमेंट (आकलन) का लैटिन मूल है “assidere” जिसका अर्थ होता है “के साथ बैठना” या “के बगल में बैठना”। आकलन की इस अवधारणा में इसका अर्थ प्रतीत होता है बच्चे से वहाँ मिलना जहाँ वह है। अक्सर उसके साथ होने वाली बातचीत ही आकलन होती है। यह सीखने की उसकी यात्रा में उसके साथ-साथ चलना है, समझना कि वह किस तरह सोच रहा है, और चीजों को समझना, उसे कौन-सी चीजें रोमांचित करती हैं, कौन-सी बातें परेशान करती हैं, उसके सीखने का विस्तार करना, उसे उस समय चीजें

सिखाना जब वह उनकी माँग करता हो, या जब ऐसा लगे कि उसे उनकी जरूरत हो। मेरा काम असल में उसके प्रश्नों और जिज्ञासा से शुरू करना था और उसे ऐसे अनुभव देना था जिनसे हम ज्ञान को संगठित करने और दुनिया की पड़ताल करने के विषयों में बँटे हुए अनुशासनात्मक तरीके विकसित कर सकते।

इस दौर में कई आश्चर्यचकित कर देने वाले पल भी थे, जहाँ मैं विद्यार्थी थी। हम आकारों पर चर्चा कर रहे थे, हम यह देखने की कोशिश कर रहे थे कि एक वर्ग को दो त्रिकोणों में कैसे काटा जा सकता था। नील पूछ रहा था, “क्या आप किसी वर्ग से वृत्त बना सकती हैं?” मैंने कहा कि मुझे नहीं पता कि यह कैसे किया जाता है। फिर वह बोला, “हाँ, हम बना सकते हैं। अपनी खाने की मेज को ले लो; वह एक वर्ग है जिसके चार कोने कटे हुए हैं। अब अगर हम कोनों को काटना जारी रखते हैं और फिर नए बने कोनों को भी काटते जाते हैं, और हम ऐसा करते ही चले जाते हैं, तो वह मेज वृत्त में तब्दील होने लगेगी!” निश्चित ही यह उसी तरह की सोच है जो कलन (कैलकुलस) में इस्तेमाल होती है।

## पाठ्यचर्या, सीढ़ी या संजाल?

मुझे एक दिन की बात याद है जब नील (जो उस समय वह करीब 7 वर्ष का था) स्कूल से ऐसे होमवर्क के साथ वापस आया जिसमें तीन अंकों वाली संख्याओं का जोड़ करना था। वह अपनी मॉन्टेसरी गिनतारे से तीन अंकों वाली संख्याओं को जोड़ पाता था। पर ऐसा लगा कि वर्कशीट में उसे नियत ढंग से संख्याओं को जोड़ना था जिसमें हासिल के लिए संकेतों का प्रयोग करना था। अब नील अपने मन में 2 अंकों वाली संख्याएँ जोड़ सकता है, कभी संख्याओं को खण्डित करके, कभी उन्हें नए समूहों में जोड़कर और कभी दूसरे तरीकों से। वह हर बार एक ही तरीके का इस्तेमाल नहीं करता। मुझे लगता है कि उसके लिए यह इस प्रक्रिया का एक मजेदार हिस्सा है। वह हमेशा आपको यह बता सकता है कि उसने यह कैसे किया। अलगोरिथम (कलन विधि) में उसे मजा नहीं आता। मुझे यकीन है कि उसकी उम्र के ऐसे कुछ बच्चे होते होंगे जिन्हें अलगोरिथम की

पूर्वानुमेयता, सक्षमता और पुनरुत्पादकता पसन्द आती होगी। वे अलगोरिथमों की ताकत को लेकर रोमांचित रहते हैं। पर नील को जोड़ करने में दिक्कत आती थी। मैं देख सकती थी कि वह और ज्यादा परेशान होता जा रहा था, फिर वह बोला, “मैं यह नहीं कर सकता, मुझे पहले से पता है कि यह कैसे करना है, यह बहुत ही सरल है और उबाऊ।” फिर कुछ समय बाद उसने कहा, “मैं गणित में अच्छा नहीं हूँ।”

मैंने स्थिति को इस तरह समझा। उसे पता था कि यह अलगोरिथम द्वारा किया जा सकता था, पर वह उसके हिसाब से काम करने के लिए अभी राजी नहीं था। लेकिन फिर क्यों उसने अपने बारे में निष्कर्ष की यह छलाँग लगाई और कहा, “मैं गणित में अच्छा नहीं हूँ। आखिर बात क्या थी?”

मैंने कहा, “चलो ऐसा कुछ करते हैं जो तुम्हें गणित में अच्छा लगता हो। तुम क्या करना चाहते हो?” उसने कहा कि बड़ी कक्षा में औसत पढ़ाया जा रहा था। वह घर के सारे लोगों की औसत आयु का पता लगाना चाहता था। और हमें वह करके काफी मजा आया। मैंने उससे पूछा कि वह औसत से क्या समझता है। उसने मुझे समझाया। फिर ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे यह बात समझ आ गई है कि हमें सब लोगों की उम्रों को जोड़कर परिणाम में मिली संख्या को लोगों की कुल संख्या से विभाजित करना था। इसमें कोई समस्या नहीं थी क्योंकि घर में सारे लोगों की उम्र एक अंक या दो अंकों वाली थीं।

तो उसने ऐसा क्यों सोच लिया कि वह गणित में अच्छा नहीं था? क्या इसलिए कि हमारी स्कूली शिक्षा व्यवस्था कहीं पर एक सूक्ष्म सन्देश देती है कि किसी चीज को सीखने का प्रस्तावित तरीका, पाठ्यचर्या की सीढ़ी को चढ़ते जाना ही, सीखने का एकमात्र तरीका है? यह शायद सच है कि कुछ चीजों के लिए पहले से ज्ञान/समझ होना जरूरी होती है। उदाहरण के लिए, इस बात पर बहस करना बेकार होगा कि बच्चे जोड़ की धारणा के बिना गुणा कर सकना सीख सकते हैं। पर क्या गुणन के लिए घटाने की पूर्व समझ जरूरी है? फिर क्यों इतने

सारे शिक्षक और पाठ्यपुस्तकें पाठ्यचर्या को बिलकुल सीढ़ी की तरह मानते हैं? क्या हम पाठ्यचर्या को ऐसे संजाल के रूप में नहीं देख सकते जिसके कई शुरुआती बिन्दु और कई राहें हों?

अब मुझे इस बारे में कोई सन्देह नहीं है कि नील अन्ततः 3 अंकों के हासिल वाले जोड़ के सवाल करना सीख जाएगा। पर अगर वह यह विश्वास करने लगता है कि यह औसत से ज्यादा महत्वपूर्ण है, या औसत पर जाने से पहले इन्हें सीखना ज्यादा जरूरी है, तो हो सकता है वह यह जोड़ न भी सीख पाए। ऐसा क्यों है, कि बच्चा जो कर सकता है और जो वह पहले से ही सीख रहा है, उसका महत्व उतना नहीं होता जितना इसका कि उसे क्या सीखना चाहिए। और यह सन्देश एक सक्षम सीखने वाले के रूप में उसकी स्वयं के बारे में धारणा पर क्या असर करता है?

मुझे लगता है कि हमारे आकलन की धारणाएँ पाठ्यचर्या के बारे में हमारी धारणाओं से और बच्चे कैसे सीखते हैं, इस बात से निकलती हैं। क्या सीखना एक विधिवत चरणबद्ध प्रक्रिया, जैसे बराबर दूरी पर बने डण्डों वाली सीढ़ी पर चढ़ने की तरह? बच्चे क्या सीखेंगे, यह बड़ी रहस्यमयी बात है, वे छलाँग भी लगा सकते हैं। वही बच्चा, जो छलाँग मारता है, कौशलों के और सीखने की उन बातों के साथ संघर्ष भी कर सकता है, जिन्हें अन्य बच्चे बड़ी आसानी से कर जाते हैं। घर में पढ़ाने के दौरान जिस बात का मुझे एहसास हुआ वह यह कि जब हम बच्चों को भेड़चाल वाली गति, अगर कहूँ तो “बैच-प्रोसेस” जैसे तरीके से सीखने पर मजबूर करते हैं तो हो सकता है हम इस बात को समझने से चूक जाएँ कि वे वाकई में क्या सीख रहे हैं क्योंकि हमें बस इसी बात की चिन्ता बनी रहती है कि उन्हें क्या सीखना चाहिए।

अब इस सबसे हमारे सामने सोचने के लिए कुछ सवाल खड़े होते हैं :

1. पाठ्यचर्या की सीढ़ी के बारे में मेरा दृष्टिकोण कैसा है? क्या यह सीखने का एकल रास्ता है, जैसे कि सिद्धान्तों और योग्यताओं की एक के

- ऊपर एक लगाई गई ईंट से बनी दीवार हो? या क्या पाठ्यचर्या को लेकर मेरा दृष्टिकोण किसी संजाल, या किसी नक्शे की तरह है जिसमें कई प्रविष्टि बिन्दु और कई रास्ते हैं (जिसमें कुछ खण्ड सीढ़ीनुमा भी हैं)?
2. तो क्या आकलन का मेरा दृष्टिकोण, सीढ़ी की उस ऊँचाई को चिह्नित करना है जहाँ बच्चा खड़ा है? या क्या आकलन का मेरा दृष्टिकोण ऐसा संवाद है जो मुझे सीखने के उन अनुभवों को चुनने में मदद करता है जो बच्चों के सवालों, रोमांच और उनके प्रयासों को बढ़ावा देता हो।
  3. क्या पाठ्यचर्या सीढ़ी की हमारी अवधारणा सिर्फ विद्यार्थियों की बहुत बड़ी संख्या के लिए सीखने की व्यवस्था करने का प्रभावशाली तरीका है, या क्या यह, सीखना कैसा होना चाहिए, इसको लेकर हमारी सोच का बुनियादी हिस्सा है?
  4. यदि यह उसका आधारभूत तत्व नहीं, तो क्या पाठ्यचर्या को सुनियोजित करने का कोई दूसरा तरीका है जो सभी दिशाओं में बराबरी से जानकारी को “एकत्रित करने” के बजाय, बच्चों के प्रश्नों से शुरू होता हो और उनकी सोच, कौशलों, ज्ञान और दुनिया को पड़ताल करने के उनके तरीकों में इजाफा करता हो।
  5. हमारी कक्षाओं में बच्चों की जितनी संख्या होती है उसे देखते हुए यह कहना ठीक होगा कि शायद हम पाठ्यचर्या को किसी और तरह से सुनियोजित करने के बारे में नहीं सोच सकते। इस मामले में क्या यह हमारा अनिवार्य कर्तव्य नहीं है कि हम अपने विद्यार्थियों को यह बताएँ कि जो सीढ़ी हमने चुनी है वह सिर्फ सहूलियत के हिसाब से चुनी है? क्या यह अत्यधिक जरूरी नहीं है कि बच्चे यह जानें कि सीखने के लिए कई और प्रविष्टि बिन्दु और वैकल्पिक मार्ग हैं? क्या इससे असफलता का दंश समाप्त नहीं हो जाएगा तथा सीखने के दूसरे शुरुआती बिन्दुओं और मार्गों को वैधता नहीं मिल जाएगी (कम से कम सैद्धांतिक रूप से)?

मैं सुझाव दूँगी कि कक्षा 10 की परीक्षा को सभी दिशाओं में समान रूप से “जानकारी एकत्रित करने” वाला विकल्प चुनने का कारण मानने का तर्क दोषपूर्ण है। एक पालक और शिक्षक के रूप में मुझे लगता है कि ऐसा कोई जिसने अपने सीखने के दौर में नूतन प्रयास किए हों, जिसने अपने मार्ग का नक्शा तैयार करने में खुद हिस्सेदारी की हो, जो पढ़ सकता हो, लिख सकता हो, तर्क कर सकता हो, वह कक्षा 8 में कुछ भी सीखने के लिए तैयार है। पर शायद ऐसे सवालों की तह तक जाने के लिए हमें वापिस जिस बड़े सवाल के बारे में सोचने से मदद मिलेगी, वह है कि “सीखना या शिक्षा प्राप्त करना किसलिए है?”

### **Bibliography:**

- Ashton-Warner, S. & Russel, D. (1980). *Teacher*. London: Virago  
 Dewey, J. (1956). *The child and the Curriculum*. Chicago: Chicago University Press  
 Hirst, P. H., & Peters R.S. (2011). *Teaching*. In *The Logic of Education* (pp 74 - 87 ). London: Routledge.  
 Hawkins, D. (1974). *On Living In Trees*. In *The Informed Vision; Essays on Learning and Human Nature* (pp 171-191). New York: Agathon.

**रजनी** वर्तमान में अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, बंगलौर में शिक्षण प्रशिक्षण दल में काम करती हैं। वे पिछले 18 साल से भी ज्यादा समय से एक स्कूल शिक्षिका और शिक्षा सलाहकार रही हैं। उनसे [rajni.kumar@azimpremjifoundation.org](mailto:rajni.kumar@azimpremjifoundation.org) पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : भरत त्रिपाठी